ग्रुप - 1 इकाई - 2 AEC - 1

= पारिभाषिक शब्दावली
व्यावहारिक हिन्दी
कार्यालयी हिन्दी या प्रशासनिक हिन्दी
वित्तीय हिन्दी
तकनीकी हिन्दी ।

प्रश्न :- पारिभाषिक शब्दावली को परिभाषित करते हुए, उसके प्रकार या भेदों पर टिप्पणी लिखें ।

⇒

भूमिका :-

प्राचीन काल से ही भारत में दर्शन, गणित, विज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि कुछ विषयों में भारतीय शब्दावली उपलब्ध थी। परंतु उस समय की शब्दावली में किसी शब्द का अर्थ निश्चित रूप में नहीं था, कहने का तात्पर्य यह हुआ कि मानक रूप में नहीं था। शब्दावली को एक मानक रूप की आवश्यकता थी। पारिभाषिक शब्दों के लिए पर्याय निश्चित करने एवं मानक भाषा विकसित करने का कार्य बहुत ही कठिन था परंतु इस कार्य को सरल एवं सहज बनाने के लिए नागरी प्रचारिणी सभा (काशी), हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) बंगाल साहित्य परिषद, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार), उस्मानिया विश्वविद्यालय, हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी आदि संस्थाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संस्थाओं ने पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कर प्रशासन, विज्ञान एवं तकनीकी विषयों की सटीक तथा सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की।

परिभाषाएँ :-

पारिभाषिक शब्दावली ये दोनों ही शब्द अलग-अलग हैं। जब किसी नव वस्तु, घटना या विचार के लिए जो नवीन शब्द-रचना गढ़ी जाती है जो संकेत रूप में किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त होते हैं ऐसे शब्दों को "पारिभाषिक" कहा जाता है और इनके क्षेत्र के अनुसार जो शब्दों को निश्चित किया जाता है, इसे शब्दावली कहते हैं। पारिभाषिक शब्दों की सहायता से एकार्थी तथा स्पष्ट अभिव्यक्ति संभव होती है।

हम साधारण शब्दों में कह सकते हैं कि जटिल विचारों को सांकेतिक रूप में अभिव्यक्त करने के लिए तथा विभिन्न विषयों के शास्त्रीय सिद्धांतों की अभिव्यक्ति हेतु विशिष्ट मानक शब्दों का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। ये विशिष्ट अर्थ देने वाले मानक शब्द ही पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं। अर्थात् ऐसे शब्द जो किसी विशिष्ट ज्ञान क्षेत्र के लिए एक निर्धारित अर्थ देते हों।

रेण्डम हाउस शब्दकोश के अनुसार -

"विशिष्ट विषय जैसे - विज्ञान अथवा कला की तकनीकी अभिव्यक्ति के लिए निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त एक शब्द अधिकांशतः कला का शब्द है।"

चैम्बर्स टेक्निकल डिक्शनरी के अनुसार – "पारिभाषिक शब्दावली वस्तुतः विशेषज्ञों एवं तकनीकविदों के अपने विशेष विचारों को लिपिबद्ध करने के लिए ग्रहण अनुकूलन तथा निर्माण के द्वारा तैयार किए जाने वाले प्रतीक हैं।"

विख्यात कोशकार डॉ॰ रघुवीर ने अपने शब्दकोश 'कम्प्रेहेन्सिव डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश-हिन्दी' में लिखा है कि- "जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है, वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे साधारण शब्द होते हैं।"

कोश ग्रंथों के अनुसार – "पारिभाषिक शब्द वे शब्द हैं जिनसे किसी ज्ञान-विज्ञान के विशेष क्षेत्र में एक विशिष्ट तथा निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किया जा सकता है।"

आचार्य हजारी प्रसाद 'द्विवेदी' के अनुसार – "यह शब्दावली पारिभाषिक है, साधारण बोलचाल की नहीं। यह सबके लिए या बहुसंख्यकों के लिए भी नहीं है बल्कि उन गिने-चुने लोगों के लिए है जो किसी प्रविधि विषयक विशेष अध्ययन करना चाहते हैं।"

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार — "पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिकी, दर्शन राजनीति आदि विभिन्न विज्ञानों या शास्त्रों के शब्द होते हैं तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप से परिभाषित होते हैं। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से परिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं।"

ऐसे शब्द जिनका अर्थ जानने के लिए परिभाषा या व्याख्या की आवश्यकता होती है, वे पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं। जैसे - टेलीविजन, बंदी प्रत्यक्षीकरण, चलचित्र

उदाहरण - अंग्रेजी के 'टेली' शब्द का हिन्दी पर्याय 'दूर' और 'विजन' का अर्थ 'दिखाई देना'। इन दोनों के संयोग से हिन्दी शब्दावली 'दूरदर्शन' बनता है। इसी प्रकार बंदी और प्रत्यक्षीकरण दो शब्द हैं जिसका अर्थ होता है - बंदी यानि कैदी को प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत करना।

ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर चिंतन और अनुसंधान हो रहा है। फलस्वरूप नई-नई संकल्पनाएँ विकसित हो रही हैं। और नए-नए सिद्धांत प्रविष्ट हो रहे हैं। इन संकल्पनाओं और सिद्धांतों को सुनिश्चित अर्थ प्रदान करने के लिए ऐसी शब्दावली की नितांत आवश्यकता होती है, ताकि विषय के विशेषज्ञों को परस्पर विचार-विमर्श करने की सुविधा हो सके।

Challenges, failures, defeats and ultimately, progress, are what make your life worthwhile. -Maxime Lagacé

पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार —

डॉ० भोलानाथ तिवारी ने इसे तीन आधारों पर वर्गीकृत किया है—

1. शब्द स्रोत के आधार पर,
2. शब्द रचना के आधार पर,
3. शब्द प्रयोग के आधार पर,
4. अर्थ की सूक्ष्मता के आधार पर।

1. शब्द स्रोत के आधार पर :-

स्रोत के आधार पर सब शब्द को चार वर्गों में बाँटा गया है जो विभिन्न अर्थों में रखा गया है, साथ ही इसे और एक वर्ग इसमें जोड़ा गया है। चार वर्ग - तत्सम, तद्भव, देशज और विदेश तथा पाँचवा वर्ग संकर है जिसमें दो शब्दों के योग से बनाया जाता है। उदाहरण के रूप में - रेलगाड़ी (जो रेल + गाड़ी दो भाषाओं के शब्द से बना है। रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिन्दी) = रेलगाड़ी (संकर शब्द)।

2. शब्द रचना के आधार पर :-

रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद है - रूढ़, यौगिक, योगरूढ़। जिस शब्द के खण्ड होने पर जो खण्डित वर्ण है जिसका कोई अर्थ नहीं हो उसे रूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे - पल, जल, आशा। जिस दो रूढ़ शब्दों के योग से बने शब्द को यौगिक कहते हैं। जैसे - पल-पल, जल-थल, गंगा-जल। इसमें खण्डित शब्द का अर्थ होता है।

SU	MO	TU	WE	TH	FR	SA
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

जब शब्द अन्य शब्दों के योग से बने हो परन्तु एक विशेष अर्थ के लिए प्रसिद्ध हो, उसे योगरूढ़ कहते हैं। जैसे - लम्बोदर, जलज, मृग।

③ शब्द प्रयोग के आधार पर :-

प्रयोग के आधार पर शब्द को दो वर्गों में बाँटा गया है- विकारी और अविकारी। जिन शब्दों का रूप परिवर्तन होता रहता है, उसे विकारी शब्द कहते हैं। जैसे - कुत्ता, कुत्ते, कुत्तों। अधिकतर ये संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया होते हैं।

जिन शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है, उसे अविकारी शब्द कहते हैं। जैसे - यहाँ, किन्तु, वहाँ, और, नित्य। ये क्रिया विशेषण, संबंध-बोधक आदि होते हैं।

पारिभाषिक शब्दावली में ये अधिकतर प्रयोग होते हैं।

④ शब्द अर्थ के आधार पर —

अर्थ के आधार पर कई वर्गों में बाँटा गया है। जैसे- पर्यायवाची, विलोम, भिन्नार्थक, वाक्यांशों के एक शब्द, अनेकार्थी, एकार्थक आदि।

पारिभाषिक शब्द किसी स्थूल या भौतिक वस्तु का बोध कराता है। हिन्दी के अनेक पारिभाषिक शब्दों का स्रोत संस्कृत भाषा है।

पारिभाषिक शब्दावली के सिद्धांत :-

पारिभाषिक शब्दावली के मुख्यत: चार सिद्धांत हैं"—

(1.) ग्रहण सिद्धांत
(2.) अनुकूलन सिद्धांत
(3.) संचयन सिद्धांत
(4.) निर्माण सिद्धांत ।

पारिभाषिक शब्दावली के लक्षण :-

(i) पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किसी ज्ञान विशेष के क्षेत्र में होता है।
(ii) पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ सुनिश्चित तथा पारिभाषिक होता है।
(iii) पारिभाषिक शब्दावली अभिधा के अर्थ में ही ग्रहण किया जाता है।
(iv) पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ लचीला होता है।
(v) पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में ग्रहण, अनुकूलन, संचयन तथा निर्माण की प्रक्रिया में होती है।

विशेषताएँ :-

(i) पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ स्पष्ट, सुबोध तथा निश्चित होना चाहिए।
(ii) पारिभाषिक शब्दावली उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा सुबोध होना चाहिए।

(iii) पारिभाषिक शब्दावली चयनशील होना चाहिए जिससे अनेक रूप बन सकें।

(iv) पारिभाषिक शब्द यदि किसी अन्य भाषा का अर्थ ग्रहण किया गया हो तो उसे अनुकूलन किया जाता है।

(v) पारिभाषिक शब्दों में एकरूपता होनी चाहिए।

(vi) पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग दैनिक व्यवहार में नहीं होता।

(vii) पारिभाषिक शब्द का ग्रहण चार प्रक्रियाओं द्वारा निर्धारित होती है।

(viii) पारिभाषिक शब्द ज्ञान क्षेत्र या विषय-वस्तु से सम्बद्ध संकल्पनाओं के अनुरूप होना चाहिए।

☆ पारिभाषिक शब्दावली की समस्याएँ :- पारिभाषिक शब्दावली में निम्न प्रकार की समस्याएँ आती हैं जो निम्न है -

(1.) वर्तनी संबंधी समस्याएं
(2.) लिपि की अस्पष्टता,
(3.) अंग्रेजी वर्तनी का प्रभाव,
(4.) अशुद्ध होने पर भी शुद्ध माने जाने वाले शब्द,
(5.) सर्वस्वीकृत रूप के अभाव
(6.) प्रचलन में न होना,
(7.) सरकार की अनिश्चयात्मक नीति,
(8.) देश के प्रबुद्ध वर्ग की उदासीनता,
(9.) गम्भीरता और निष्पक्षता की कमी।

(1.) वर्तनी संबंधी समस्या :-

यह पारिभाषिक शब्दावली की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है। वर्तनी की हेर-फेर की वजह से शब्द के अर्थ बदल जाते हैं। जिसे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अर्थात् कहना कुछ और चाहते हैं और हो कुछ और जाता है। जिसके कारण शब्दावली की समस्या उत्पन्न हो जाती है। जैसे - 'बेर' के स्थान पर 'बैर' करें तो अर्थ का अनर्थ निश्चित है। 'बेर' का अर्थ होता है - बार और 'बैर' का अर्थ होता है - दुश्मन।

(2.) लिपि की अस्पष्टता :-

यह पारिभाषिक शब्दावली की दूसरी समस्या है। जब किसी भाषा की लिपि स्पष्ट नहीं है तो स्वाभाविक रूप से शब्दों के निर्माण में समस्या उत्पन्न होगी। भारतीय भाषा में लिपि की अस्पष्टता होनी विदेशी भाषाओं के आगमन का कारण है। नुक्ता का प्रचलन उर्दू में उच्चारण की सुविधा के लिए है जबकि हिन्दी में नुक्ता छोड़ दिया गया है।

(3.) अंग्रेजी वर्तनी का प्रभाव :-

हिन्दी के पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग में अंग्रेजी वर्तनी स्वाभाविक रूप से प्रभावित करती है। अंग्रेजी में शब्द की लिखावट कुछ और होती है और उच्चारण कुछ और होता है जिसके कारण हिन्दी में इसका प्रभाव पड़ता है। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में समस्या

AUGUST'22
SU MO TU WE TH FR SA
1 2 3 4 5 6
7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20
21 22 23 24 25 26 27
28 29 30 31

आ जाती है कि किसे शुद्ध रूप में लिखा जाए। अंग्रेजी के कुछ कुछ शब्द हिन्दी में ऐसे प्रयोग होने लगे है कि कोई अंतर ही नहीं बुझाता है कि यह अंग्रेजी के शब्द है। जैसे- school - स्कूल।

(4.) अशुद्ध होने पर भी शुद्ध माने जाने वाले शब्द - पारिभाषिक शब्दावली में अशुद्ध शब्दों का परिमार्जन किया गया है परंतु अब विषय विशेष के प्रयोग में आने के बाद उच्चारण की सटीकता में अशुद्ध रूप को स्वीकार कर लिया जाता है। यह पारिभाषिक शब्दावली की गंभीर समस्या है। जैसे- राजनीति - राजनीती।

(5.) सर्वस्वीकृत रूप के अभाव - यह पारिभाषिक शब्दावली की सबसे जटिल समस्या है। यहाँ हर व्यक्ति का मत अपनी सुविधानुसार दिया जाता है। जिसे पारिभाषिक शब्दावली के सामने एक संकट आ खड़ा होता है। कि किसके मत को स्वीकार किया जाए और किसके मत को नकारा जाए। सभी की स्वीकृत मत के अभाव के कारण पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में समस्या आती है।

(6) प्रचलन में न होना - शब्दों का प्रचलन में न होना यह भी एक समस्या पारिभाषिक शब्दावली के सामने आती है। जो शब्द प्रचलन में नहीं है, उसे प्रचलन में

में जाता और इसके अर्थ को किसी सीमा में बाँधना। यह बहुत ही कठिन कार्य हो जाता है। ऐसे शब्दों पर विचार करना अत्यंत मुश्किल होता है।

(7.) सरकार की अनिश्चयात्मक नीति :-
इस विषय में सरकारी नीति कभी सफल और निश्चयात्मक नहीं रही। पारिभाषिक शब्दावली भारतीय भाषाओं को आधार बना कर बनाया जाए तो दूसरी बार प्रस्ताव होता है कि अंग्रेजी से शब्दों को ज्यों की त्यों ली जाए। दो प्रकार के मत होने की वजह से पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण ठीक से नहीं हो पाता है।

(8.) देश के प्रबुद्ध वर्ग की उदासीनता –
यह पारिभाषिक शब्दावली की समस्या का एक प्रमुख कारण हैं + पारिभाषिक शब्दावली के सशक्त और विस्तृत न होने का कारण देश के प्रबुद्ध वर्ग की उदासीनता है। इन्हें इस ओर ध्यान देने की न तो रुचि है और न ही इच्छा। कोई भी नया शब्द के निर्माण और प्रयोग में सबसे अधिक हिचकिचाहट इन्ही वर्ग को होती है।

(9.) गम्भीरता और निष्पक्षता की कमी –
शब्दावली निर्माण में राजनीतिक रूप से भाषा को लेकर विवाद होता है। इसी विवाद के कारण पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में निष्पक्षता की कमी दिखाई पड़ती है।

Life is given to us, we earn it by giving it. - Rabindranath Tagore

उसमें गम्भीरता कहीं भी नजर नहीं आती और इसका प्रभाव सीधे पारिभाषिक शब्दावली पर पड़ता है। भाषा को लेकर भाषाविद् कभी एक पक्ष नहीं हुए जिसके फलस्वरूप शब्दावली के निर्माण में समस्या उत्पन्न हो जाती है।

* **पारिभाषिक शब्दावली के समाधान :-**

हिन्दी के संदर्भ में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी का व्यवहार अत्यधिक विस्तृत हो गया है। अतः जीवन के विभिन्न अनुशासनों के अध्ययन के लिए उनकी पारिभाषिक शब्दावली का हिन्दी में होना जरूरी है। इस प्रकार, नये राजनीतिक - संदर्भ, नयी औद्योगिकता, नयी शिक्षा और स्वतंत्र देश की नयी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पारिभाषिक शब्दावली की समस्याओं का समाधान आवश्यक है। इस समस्या के समाधान के लिए तीन स्तरों पर प्रयास हुआ—

(1) शैक्षिक तथा साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम द्वारा विशेष रूप से योगदान दिया गया। जिसमें नागरी प्रचारिणी सभा, साहित्य सम्मेलन प्रयाग, साहित्य परिषद् तथा हिन्दुस्तान कल्चर सोसाइटी आदि प्रमुख रूप से हिस्सा लेकर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(2) इस क्षेत्र में भाषा विशेषज्ञों ने भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिनमें से डॉ. रघुवीर, पं. सुंदरलाल

डॉ. जाफर हसन का विशेष रूप से योगदान रहा।

(ङ) इस क्षेत्र में सरकार ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के द्वारा गठित 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली' द्वारा इस क्षेत्र में विशेष रूप से कार्य किया गया।

इसके निम्नलिखित समाधान है जो इस प्रकार है -

(क) पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में सरकार को कई समितियों का गठन कर पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में और जोर देना चाहिए ताकि मजबूत और पुष्ट शब्दावली का निर्माण हो सके।

(ख) पारिभाषिक शब्दावली बनाने के क्रम में भावुकता को परे रखकर तार्किकता से काम लेना चाहिए। यदि अंग्रेजी की समस्त पारिभाषिक शब्दावली को भले ही ग्रहण न किया जाए परंतु भाषा के अनुकूल ही शब्दों को रखा जाना चाहिए। जैसे- एकेडमी-अकादमी

(ग) संस्कृत भाषा के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली बनाए जाए। इसका एक कारण तो यह है कि संसार में संस्कृत, चीनी, ग्रीक, लैटिन ये चार भाषाएँ ऐसी हैं; जिनमें शब्द निर्माण की अपरिमित क्षमता और पूर्ण योग्यता है और इनमें भी संस्कृत का स्थान सर्वोच्च है।

★ निष्कर्ष :-

इस प्रकार पारिभाषिक शब्दावली से हम ज्ञान-विज्ञान आदि क्षेत्रों में भाषा के प्रयोग को सरलता के साथ उपयोग में लाया जा सके हैं और कठिन कार्यशैली को सहज, सुगम एवं सरल बना सकते हैं। पारिभाषिक शब्दावली न तो सार्वजनिक है और न तो बहुसंख्यकों के लिए ही है। इसका प्रयोग विशेष विषय के लिए विशेष अर्थ एवं व्यवहार के लिए प्रयोग किया जाता है।